

प्रेमु वर्षायो आ ( ८३ )

नन्हो नेही आयो आ नैन मन भायो आ।  
मिली खिली गायूं जै हो जै हो जै हो॥

अमां अंडण में अजु आनंद जी धूम आ  
पूर्णमा चान्दनी आ रस रूम झूम आ  
प्रेम रंगु लायो आ सभिनी छकायो आ—मिली॥

अमां बाबा सद कंदो जदहीं लालु मौज सां  
मनु प्राण तदहीं भरे मिठे चाव चौज़ सां  
वेदनि भी गायो आ सुर मुनि साराहियो आ॥

रेढ़ियूं पाए अंडण में लालु जदहीं खेल करे  
चण्डु लही गगन मां बालक जे पोयां फिरे  
रूप सरसायो आ प्रेमु वर्षायो आ॥

आनन्द जो कन्दु तुंहिजो लादुलो मुकुन्द आ  
जंहिजे रूप अगियां फिको चोदसि जो चण्डु आ  
गुरनि घुरायो आ अलख लखायो आ॥

सोनिड़े सलोने साईं ब्राल रूप धारियो आ  
जंहिजी मृदु मुस्कान ततलनि ठारियो आ  
हरी हर्षायो आ भालिड़ो भलायो आ॥